इकाई 8 थियोडोर डब्ल्यू एडोर्नो: संस्कृति उद्योग

इकाई की रूपरेखा

8.0 उद्देश्य

8.1 प्रस्तावना

8.2 एडोर्नो:जीवन और समय–काल

8.2.1 एडोर्नो:एक जीवनी विवरण

8.2.2 सांस्कृतिक और बौद्धिक संदर्भ

8.3 पूंजीवाद और स्वतंत्रता

8.3.1 पूंजीवाद और वस्तुएँ

8.3.2 प्रबोधन और स्वतंत्रता

8.4 वस्तु के रूप में संस्कृति

8.4.1 संस्कृति उद्योग और जन संस्कृति

8.4.2 संस्कृति उद्योग के उत्पाद और प्रक्रिया

8.4.2.1 मानकीकरण

8.4.2.2 कृत्रिम–व्यक्तिकरण

8.5 सारांश

8.6 संदर्भ

8.7 बोध प्रश्नों के उत्तर

8.0 उद्देश्य

इस इकाई को पढ़ने के बाद, आप इस योग्य हो जाएंगे कि:

- एडोर्नो के सामाजिक–राजनीतिक संदर्भ की व्याख्या कर सकें;
- कमोडिटी फैटीशीज्म और पूंजीवाद के स्वरूप पर चर्चा कर सकें;
- संस्कृति उद्योग के मूलभूत तत्वों को समझ सकें; और
- एडोर्नो के विचारों को अपने समकालीन मनोरंजन उद्योग से जोड़ सकें।

8.1 प्रस्तावना

अपनी पिछली इकाई में हमने ,अन्य बातों के अलावा, कुछ मुख्य विचारों को जानने का प्रयास किया है, जो फ्रैंकफर्ट स्कूल द्वारा जन–संस्कृति के खिलाफ प्रस्तुत किए गए। इस इकाई में हम थियोडोर डब्ल्यू एडोर्नो के कार्यों पर चर्चा करेंगे, विशेष रूप से उनके संस्कृति उद्योग लेखन पर।

डा. किरणमयी भूषी, प्रोफेसर, समाजशास्त्र संकाय, सामाजिक विज्ञान विद्यापीठ, इग्नू द्वारा लिखित।

एडोर्नो के लेखन को आकार देने वाले सामाजिक–राजनीतिक संदर्भ को पूरी तरह से समझने के लिए, हम इकाई की शुरुआत उनके जीवन–काल और उनके स्वयं के जीवन की यात्रा को समझने के साथ करते हैं। इसके बाद, इकाई कुछ आवश्यक प्रश्नों को संबोधित करती है, जिनका एडोर्नो अध्ययन कर रहे थे, जैसे कि मनुष्य सत्तावादी शासन संरचनाओं को पनपने क्यों देते हैं, और कैसे वे पूंजीवादी बाजार शासनों के इच्छुक पात्र (Subjects) बन जाते हैं।

इन सवालों को समझने के लिए , हमें पहले एडोर्नो के मूलभूत विचारों के दो पहलुओं को चित्रित करना होगाः एक जो मार्क्स की कमोडिटी फैटीशीज्म (Comidity Fetishism–वस्तु अंधभक्ति) की अवधारणा का द्वितीय विश्व युद्ध के बाद के समृद्ध उपभोक्ता समाज में विस्तार करता है, विशेष रूप से अमेरिका के संदर्भ में। और दूसरा जो प्रबोधन (Enlightenment) परियोजना पर सवाल उठाता है। प्रबोधन ने अपनी वैज्ञानिक प्रगति से मनुष्य को मुक्त करने की बजाय उसे गुलाम बना लिया। संस्कृति उद्योग इन स्पष्टीकरणों का एक पहलू है। अगला खंड संस्कृति उद्योग पर एडोर्नो और होर्खाइमर के मुख्य विचारों से संबंधित है।

8.2 एडोर्नोःजीवन और समय–काल

एडोर्नो को 20वीं सदी के अग्रणी दार्शनिकों में से एक माना जाता है। उनके संग्रहित कार्यों में लगभग तेईस वॉल्यूमें शामिल हैं। उन्होंने कई प्रकरणों और विषयों पर लिखा, जिसमें संगीत पर, विशेष रूप से जैज (Jazz) पर, दार्शनिक विश्लेषण, लॉस एंजिल्स टाइम्स के लिए ज्योतिष का आलोचनात्मक अध्ययन आदि शामिल था। हालांकि, उन्होंने कई विषयों पर लिखा, उनका केंद्र–बिंदु मानव पीड़ा थी– विशेष रूप से मानव स्थिति पर आधुनिकता का प्रभाव। इस जटिल दार्शनिक और आधुनिकता के आलोचक की रचनाओं को समझने की कोशिश में, यह जानने से शुरूआत की जा सकती है कि उनकी प्रेरणाएं, उनके जीवन की यात्रा और बौद्धिक प्रभाव क्या हैं, जो उनके लेखन को प्रभावित करते हैं। हम आगे के उपखंडों में उनके जीवनी रेखाचित्र और विभिन्न बौद्धिक प्रभावों पर संक्षेप में चर्चा करेंगे।

8.2.1 एडोर्नोःएक जीवनी विवरण

थियोडोर विसेंग्रंड एडोर्नो (Theodor Wiesengrund Adorno) का जन्म 1903 में फ्रैंकफर्ट, जर्मनी में एक मध्य जर्मनी के अपेक्षाकृत संपन्न माता–पिता के यहाँ हुआ था। उनकी मां मारिया कैलवेली–एडोर्नो डेला पियानावास इटली में पैदा हुई एक प्रतिभाशाली गायिका थीं, और उनके पिता एक यहूदी वाइन (Wine) व्यापारी थे। एडोर्नो अपनी मां और मौसी के कारण संगीत में रुचि के साथ बड़ा हुआ, और 12 साल की उम्र में ही पियानो पर बीथोवेन (Beethoven) का संगीत बजाने योग्य हो गया। एडोर्नो संगीत की दृष्टि से प्रतिभाशाली बच्चे थे, जिन्होंने 1920 की शुरुआत में वियना में एल्बन बर्ग से संगीत की शिक्षा प्राप्त की और उनकी प्रतिभा को बर्ग और शोनबर्ग (Berg and Schoeburg) जैसे संगीत के महान लोगों

द्वारा मान्यता प्राप्त थी। हालाँकि, 1920 के अंत में वे एक शिक्षक के रूप में फ्रैंकफर्ट विश्वविद्यालय में शामिल हो गए, जहाँ उन्होंने अपना समय दर्शनशास्त्र के अध्ययन और शिक्षण के लिए समर्पित किया।

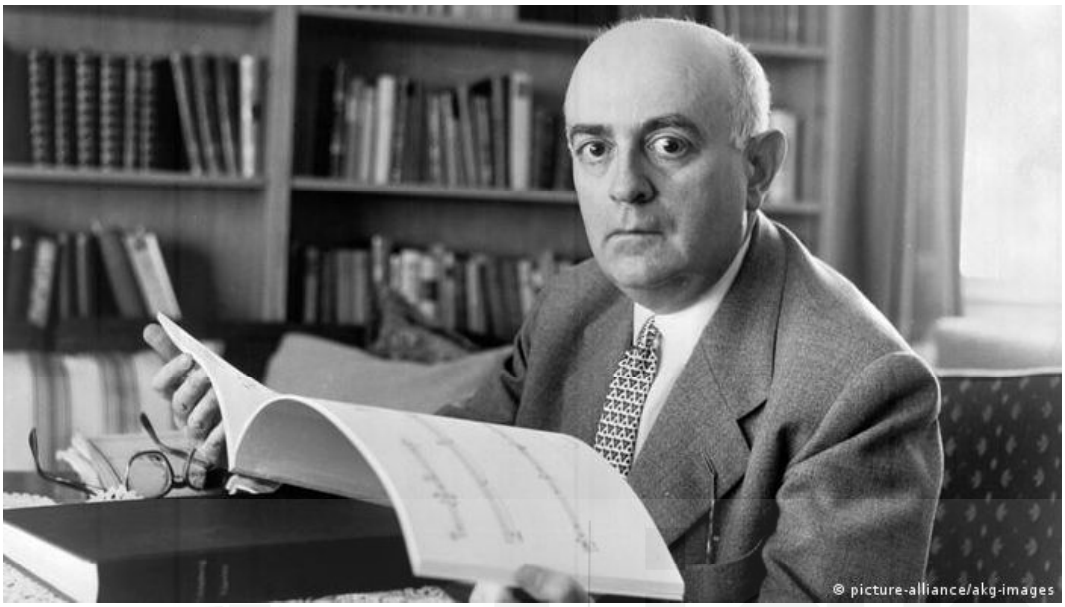

(तस्वीर साभारः https://static-dw-com)

एडोर्नो की यहूदी विरासत ने उन्हें नाजी जर्मनी से निर्वासन की तलाश करने के लिए मजबूर किया, निर्वासन की इस स्थिति का उनके जीवन और सोच पर गहरा प्रभाव पड़ा और जो उनके लेखन में परिलक्षित होता है। 1934 में यहूदियों के 'नाजी' उत्पीड़न के मद्देनजर एडोर्नो इंग्लैंड चले गए। उन्होंने मर्टन कॉलेज, ऑक्सफोर्ड में डॉक्टरेट छात्र के रूप में पंजीकरण कराया, और फिर न्यूयॉर्क में यूनिवर्सिटी ऑफ फ्रैंकफर्ट के सामाजिक अनुसंधान संस्थान के सदस्य के रूप में कार्य किया और अंततः दक्षिणी कैलिफोर्निया चले गए। अमेरिका में उन्होंने 'प्रिंसटन' (1938–1941) में काम किया। बाद में वे 'कैलिफोर्निया विश्वविद्यालय, बर्कले' (1941–1948) में 'सामाजिक भेदभाव पर शोध परियोजना' में शामिल हो गए।

1949 में, एडोर्नो 'फ्रैंकफर्ट विश्वविद्यालय' में लौट आए और 'सामाजिक अनुसंधान संस्थान' की सह–स्थापना की, जहां वे दर्शनशास्त्र और समाजशास्त्र के प्रोफेसर थे। उन्होंने 'फ्रैंकफर्ट स्कूल' को फिर से सक्रिय किया, जो अपनी आलोचनात्मक सोच के लिए जाना जाता था, खासकर पूंजीवादी जन संस्कृति पर। संस्थान में एकत्र हुए विभिन्न विद्वान जैसे हर्बर्ट मार्क्यूज (1898–1979) (जिनके बारे में आप अगली इकाई में जानेंगे), मार्क होर्खाइमर (1895–1973), वाल्टर बेंजामिन (1892–1940), एरिक फौर्म (1900–1980) आधुनिक औद्योगिक पूंजीवादी समाज से संबंधित मुद्दों से जूझ रहे थे। कार्ल मार्क्स की तरह, जिनके विचारों का उन्होंने पालन किया, इन आलोचनात्मक सिद्धांतकारों की भी उन सामाजिक, राजनीतिक और आर्थिक स्थितियों को समझने में रुचि थी, जो मानव की दमनकारी संरचनाओं से मुक्ति को संभव बना सकती हैं। 20वीं सदी के आरंभ और मध्य में पश्चिमी यूरोप और उत्तरी अमेरिका की सामाजिक परिस्थितियों ने उन्हें प्रबोधन की स्वतन्त्र करने की संभावनाओं पर सवाल उठाने पर बाध्य किया। तो यह सामाजिक संदर्भ

क्या है, जिसमें फ्रैंकफर्ट स्कूल शामिल था? वे कौन से मुख्य प्रश्न पूछ रहे थे? यह महत्वपूर्ण है कि हम उस सामाजिक–सांस्कृतिक और बौद्धिक संदर्भ को समझें, ताकि हम एडोर्नो के कुछ मौलिक विचारों को पूरी तरह से समझ सकें।

8.2.2 सांस्कृतिक और बौद्धिक संदर्भ

फ्रैंकफर्ट स्कूल 1923 में स्थापित किया गया था और बाद में जर्मनी में नाजी शासन के दौरान इसे बंद कर दिया गया था। नाजी जर्मनी में बुद्धिजीवियों के उत्पीड़न के कारण, संस्थान से जुड़े कई विद्वानों को अपने बचाव के लिए संयुक्त राज्य अमेरिका में शरण लेनी पड़ी। फ्रैंकफर्ट स्कूल ने प्रौद्योगिकी और संस्कृति (Technology and Culture) पर ध्यान केंद्रित किया, जो यह दर्शाता है कि कैसे प्रौद्योगिकी उत्पादन की एक प्रमुख शक्ति और सामाजिक संगठन और नियंत्रण का प्रारंभिक साधन, दोनों बन रहा था। संस्कृति के क्षेत्र में, प्रौद्योगिकी ने जन संस्कृति का निर्माण किया, जिसने व्यक्तियों को विचार और व्यवहार के प्रमुख स्वरूपों के अनुरूप होने की आदत डाल दी, और इस प्रकार सामाजिक नियंत्रण और वर्चस्व के शक्तिशाली साधन प्रदान किए।

एडोर्नो और फ्रैंकफर्ट स्कूल के एक अन्य सदस्य होर्खाइमर, जिन्होंने बाद में सहकार्य किया, ने नाजी जर्मनी में युद्ध और बंदी शिविरों में प्रौद्योगिकी के उपयोग को देखा, जहां यहूदियों (Jews) को मारने के लिए आधुनिक तकनीक और विज्ञान दोनों का बड़े पैमाने पर इस्तेमाल किया गया था। उन्होंने मनोरंजन उद्योग जैसे सिनेमा, रेडियो, समाचार पत्र, पत्रिकाओं और विज्ञापन में प्रसारण प्रौद्योगिकी के उपयोग को भी देखा, जिसने पूंजीवादी उपभोक्तावादी बाजार की सहायता की। इन दोनों मामलों में, लोग नाजीवाद के सत्तावादी शासन की हावी शक्ति या विज्ञापन और उपभोक्तावाद की सम्मोहक शक्ति को स्वेच्छा से स्वीकार करते प्रतीत होते हैं।

फ्रैंकफर्ट स्कूल, जैसा कि हमने अपनी पिछली इकाई में उल्लेख किया था, मार्क्सवादी विचारों से काफी प्रभावित था। हालाँकि, आलोचनात्मक या क्रिटिकल स्कूल मार्क्स के विचारों को विश्व युद्ध के बाद की 20वीं सदी के समकालीन समाज तक पहुँचाना चाहता था।वे विशेष रूप से इस सवाल से चिंतित थे कि गरीबी और अभावों के बावजूद मजदूर वर्ग पूंजीवादी व्यवस्था को उखाड़ क्यों नहीं सका, ऐसा क्यों है कि वे पूंजीवादी व्यवस्था द्वारा निर्मित वैचारिक ढांचे पर काबू पाने में सक्षम नहीं हैं? एडोर्नो के लिए उन विशिष्ट संदर्भों को समझना महत्वपूर्ण था, जो एक ऐसी चेतना पैदा करते हैं जो उस चेतना से अलग थी, जो 19वीं शताब्दी के उत्तरार्ध के समाज के लिए विशिष्ट थी, जिसके बारे में मार्क्स बात कर रहे थे।

आइए, हम एडोर्नो के मुख्य विचारों को बेहतर ढंग से समझने के लिए देखें कि संस्कृति उद्योग से उनका और होर्खाइमर का क्या मतलब है।

8.3 पूंजीवाद और स्वतंत्रता

फ्रैंकफर्ट स्कूल ऑफ क्रिटिकल थ्योरी के सदस्य थियोडोर एडोर्नो (1903–1969) के लिए, संस्कृति एक गंभीर मामला था। उनके अनुसार, मानव के लिए संस्कृति सबसे महत्वपूर्ण है और इस तरह उन्होंने तर्क दिया कि संस्कृति को समाज का प्रतिबिंब

होना चाहिए। एडोर्नो और होर्खाइमर ने संस्कृति के प्रश्न पर ध्यान से विचार किया, क्योंकि उन्हें लगा कि संस्कृति के द्वारा समाज की प्रकृति के बारे में जाना सकता है। ऐसा विचार उनके इस दावे से निकलता है कि समाज और संस्कृति को दो अलग–अलग तत्वों के रूप में नहीं देखा जाना चाहिए, बल्कि समग्रता में देखा जाना चाहिए।

8.3.1 पूंजीवाद और वस्तुएँ

जैसा कि हमने पहले उल्लेख किया है कि फ्रैंकफर्ट स्कूल पूंजीवाद पर कार्ल मार्क्स की थीसिस से प्रभावित था, लेकिन बड़े पैमाने पर हो रहे उत्पादन की समकालीन संस्कृति के संदर्भ में उनके विचारों की जांच करना चाहता था। फ्रैंकफर्ट स्कूल की पूंजीवाद की आलोचना न केवल एक आर्थिक प्रणाली के रूप में थी, बल्कि एक वैचारिक प्रणाली के रूप में भी थी जो इसे बनाए रखती है। मार्क्स द्वारा विस्तृत एक महत्वपूर्ण अवधारणा वस्तु या कमोडिटी फैटीशीज्म की धारणा है; जहां चीज़ो को तटस्थ वस्तुओं के रूप में माना जाता है। उन वस्तुओं का मूल्य उनके खुद से उभरता प्रतीत होता है। एक वस्तु के लिए मूल्य का आरोपण, जो उनके खुद से नहीं उभरता, वास्तव में उन सामाजिक संबंधों और उत्पादन प्रक्रियाओं को छुपाता है, जो वस्तु के निर्माण में इस्तेमाल किए गए हैं; विशेष रूप से मानवीय संबंध, जो उत्पादन प्रक्रिया का हिस्सा हैं। हम समझते हैं कि हम वस्तु का क्या उपयोग कर सकते हैं यानी इसका उपयोग मूल्य जानते है, लेकिन हम उन विभिन्न तत्वों को नहीं देख सकते हैं, जिन्होंने वस्तु को उनका मूल्य दिया है। उदाहरण के लिए, जब हम चॉकलेट खरीदते हैं, तो हम निश्चित रूप से इसका आनंद लेते हैं, लेकिन शायद ही हम जानते हैं कि चॉकलेट मध्य अफ्रीका या दक्षिण अमेरिका से प्राप्त कोको (Cocoa) की फलियों से आती है, जहां अक्सर बाल श्रम को कोको कटाई और उत्पादन में लगाया जाता है। मार्क्स का मानना है कि यह सामाजिक रूप से भ्रमजाल का एक महत्वपूर्ण रूप है; बाजार समाज उस वर्चस्व और शोषण के संबंधों को मिटा देता है, जिस पर वह निर्भर करता है।

एडोर्नो और होर्खाइमर, फ्रैंकफर्ट स्कूल के अन्य लोगों की तरह सवाल करते हैं कि ऐसा क्यों है कि मनुष्य न केवल पूंजीवादी उत्पादन के कारण होने वाली वास्तविक शोषणकारी स्थितियों का एहसास नहीं कर पाते हैं, बल्कि ऐसे बड़े पैमाने पर हो रहे बाजार–उन्मुख उत्पादन का प्रतिरोध भी बहुत कम करते प्रतीत होते हैं। उन्होंने अपने समय के दौरान संयुक्त राज्य अमेरिका की संपन्नता और बाजार–उन्मुख उपभोग जीवन शैली में इसका अनुभव किया। एडोर्नो और होर्खाइमर ने जर्मनी में फासीवाद का अनुभव भी किया, जैसा कि हमने पहले उल्लेख किया, जिसने उन्हें पूछने के लिए प्रेरित किया कि लोग स्वेच्छा से सत्तावादी शासन क्यों स्वीकार करते हैं; जैसे हिटलर के अधीन नाजीवाद, यह मानते हुए कि यह उनके लिए अच्छा है? जबरदस्ती (Coercion) अक्सर लोगों को नियमों, विनियमों या दमनकारी प्रणालियों का पालन करने के लिए मजबूर करती है, लेकिन एडोर्नो ने पाया कि लोग स्वेच्छा से भी दमनकारी व्यवस्थाओं का पालन करते हैं, चाहे वह पूंजीवाद हो जो शोषणकारी है और समरूप या सर्वसत्तावादी शासन हो। इन सवालों की गहराई में जानने के लिए उन्होंने फ्रायड (Freud) और मनोविश्लेषण की ओर रुख किया। इसके साथ ही सामान्य रूप से

फ्रैंकफर्ट स्कूल और उनमें से एडोर्नो ने प्रबोधन परियोजना पर सवाल उठाना शुरू कर दिया, जिसने मानव जाति को सम्मान और स्वतंत्रता प्रदान करने का वादा किया था।

8.3.2 प्रबोधन और स्वतंत्रता

प्रबोधन की अवधारणा एडोर्नो और होर्खाइमर की संस्कृति उद्योग की अवधारणा के विकास के केन्द्र मे थी, जिसने विज्ञान और प्रौद्योगिकी में प्रगति के साथ जो नियंत्रण के तंत्र बन गए है, प्रकृति पर तकनीकी प्रभुत्व, की अनुमति दी हैं; चाहे उनका उपयोग युद्ध के लिए किया जाता हो या औद्योगिक और बड़े पैमाने पर माल के उत्पादन या संस्कृति के लिए। वे हवाला देते हैं कि कैसे नाजी बंदी शिविरों में नरसंहार के लिए प्रौद्योगिकी का उपयोग किया गया था, वे मनोरंजन के कॉर्पोरेट उत्पादन–फिल्में, रेडियो आदि की ओर भी इशारा करते हैं। एडोर्नो और होर्खाइमर तर्क प्रस्तुत देते हैं कि हमें इस सवाल का समाधान करने की आवश्यकता है कि विज्ञान और प्रौद्योगिकी में प्रगति के बावजूद, जो हमें इन स्थितियों से मुक्ति दिलाने का दावा करते हैं। असमानता, भूख और मानव की पीड़ा के अन्य रूप क्यों हैं, एडोर्नो कहते हैं, मूल कारण यह है कि कैसे उत्पादन के पूंजीवादी संबंध पूरे समाज पर हावी हो गए हैं, जिससे अत्यधिक असमानता पैदा हो गई है, हालांकि यह असमानता भ्रामक हो गई है। जैसा कि लोगों को यह विश्वास दिलाया जाता है कि उनके पास विकल्प और स्वतंत्रता है कि वे सामान खरीद सकते हैं, और इच्छा और आनंद की वस्तुओं का उपभोग तब तक कर सकते हैं, जब तक वे कड़ी मेहनत करते हैं और खरीदने के लिए उनके पास पैसा है। यह भ्रम कि आपके पास चयन और व्यक्तित्व है, बड़ी चतुराई से विज्ञापनों और इस तरह के अन्य आख्यानों द्वारा मास मीडिया की विभिन्न नई तकनीकों के माध्यम से प्रसार किया जाता है।

यह भ्रम व्यक्तियों के बीच एक स्वायत्त चेतना के विकास को रोकने का काम करता है। मार्क्स का मानना था कि व्यक्ति अंततः, चरम असमानताओं के कारण , पूंजीवादी व्यवस्था के खिलाफ उठेंगे और इसलिए अपने स्वयं के अंतर्विरोध पैदा करेंगे। लेकिन द्वितीय विश्वयुद्ध के बाद के अमेरिका में मार्क्स गलत साबित हुए, जहां निगमों द्वारा बड़े पैमाने पर उत्पादित खपत ने उन्हें उपभोक्तावाद की ओर धकेल दिया और पूंजीवाद की ताकतों के तहत श्रमिक वर्गों की अधीनता पर आधारित सामाजिक व्यवस्था के विघटन को रोक दिया। अपने मानकीकृत सांस्कृतिक उत्पादों से व्यक्तियों को आनंद की प्राप्ति तो हुई, लेकिन उनकी आलोचनात्मकता क्षीण हो गई, जिसने उन्हें अपने लिए सोचने और न्याय करने से रोका। हालाँकि, एक स्वायत्त चेतना और व्यक्ति की स्वतंत्रता लोकतंत्र के अस्तित्व के लिए महत्वपूर्ण आवश्यक शर्तें हैं। इसलिए राजनीतिक, आर्थिक और सामाजिक स्वतंत्रता के अस्तित्व के लिए सांस्कृतिक स्वतंत्रता का भी अस्तित्व होना चाहिए। एडोर्नो के लिए इसलिए, यदि कोई समाज स्वतंत्रता पर आधारित है, तो उसकी संस्कृति स्वतंत्रता के वादे को प्रतिबिंबित करेगी और स्वायत्त व्यक्तियों को विकसित करने में सक्षम बनाएगी। हालांकि, अगर ऐसा नहीं है और इसके बजाय हम खुद को ऐसे समय में पाते हैं, जब समाज स्वयं दमन के अधीन है और स्वतंत्रता सीमित है, तो संस्कृति इसे प्रतिबिंबित करेगी। संस्कृति उद्योग एक निबंध था, जिसे एडोर्नो

और होर्खाइमर ने शुरू में प्रबोधन की द्वंद्वात्मकता (Dialectics) के रूप में लिखा था; उनके मुद्दे ,जो उनके जीवन के लेखनों को रेखांकित करते हैं,सामने आते हैं जब वे इस संभावना पर विचार करते हैं कि समाज में प्रबोधन संस्कृति के प्रश्न के साथ अभिन्न रूप से जुड़ा हुआ है।

संस्कृति पर एडोर्नो के विचार उनके जीवन–काल के समय की राजनीतिक परिस्थितियों को प्रतिबिंबित करते थे (1944 में प्रकाशित यह पुस्तक ऐसे समय में आई है जब जर्मनी में नाजीवाद शासन में ही था), लेकिन उनका काम भी विशेष रूप से रुचि का था, क्योंकि यह समाज और संस्कृति की बाधाओं की ओर संकेत करता था, जो पूंजीवाद की प्रक्रिया के तहत पीड़ित थे। इसी के संदर्भ में वह जनसंस्कृति पर सावधानी से विचार करते हैं।

बोध प्रश्न 1

नोटः i) अपने उत्तरो के लिए नीचे दिए गए स्थान का प्रयोग कीजिए।

ii) इकाई के अंत में दिए गए उत्तरों से अपने उत्तर मिलाइए।

1. एडोर्नो और होर्खाइमर जर्मनी से क्यों चले गए थे ?

.....

.....

.....

.....

2. कमोडिटी फैटीशीज्म से क्या तात्पर्य है?

.....

.....

.....

.....

8.4 वस्तु के रूप में संस्कृति

एडोर्नो और होर्खाइमर के अनुसार, संस्कृति उद्योग में कला का वस्तुकरण शामिल है। जब भी कोई कला के बारे में सोचता है, तो वह रचनात्मक प्रक्रिया के बारे में सोचता है, जिसका शायद एक उच्च उद्देश्य या निश्चित उपयोग मूल्य है, लेकिन वस्तुओं की तरह, एडोर्नो और होर्खाइमर तर्क देते हैं कि कला या संस्कृति का भी वस्तुकरण हो जाता है। कई कला संग्रहकर्ता निवेश के उद्देश्य से कला खरीदते हैं, एक कलाकार को सफल माना जाता है, यदि वह अपनी कला का काम उच्च कीमत पर बेचने में कामयाब रहा हो। संस्कृति अभिव्यक्ति उस विनिमय मूल्य का हिस्सा नहीं है, जो विशुद्ध रूप से बेचने के उद्देश्य से है, लेकिन असमानता या उत्पीड़न के प्रतिरोध को व्यक्त करने के लिए एक सांस्कृतिक अभिव्यक्ति हो सकती है। हालांकि, यह बाजार संचालित पूंजीवादी तर्क के अधीन भी हो सकती है, जहां

सबसे बड़ी संख्या में लोगों को बेचना महत्वपूर्ण बात है। जब एडोर्नो और होर्खाइमर संस्कृति उद्योग की बात कर रहे थे, तो वे विशेष रूप से मनोरंजन उद्योग का उल्लेख, विशेष रूप से, नहीं कर रहे थे, जिसके बारे में उन्हें संयुक्त राज्य अमेरिका में निर्वासन के दौरान पहली बार प्रत्यक्ष रूप से मालूम चला। आइए, नीचे के खंडों में एडोर्नो और होर्खाइमर की संस्कृति उद्योग पर विचारों की चर्चा करें:

8.4.1 संस्कृति उद्योग और जन संस्कृति

जब एडोर्नो और होर्खाइमर संस्कृति उद्योग की बात करते हैं, तो वे मानकीकृत सांस्कृतिक निगम द्वारा निर्मित कृतियों–फिल्मों, रेडियो कार्यक्रमों, पत्रिकाओं आदि का उल्लेख कर रहे हैं। उनका तर्क है कि इनका सेवन जन समाज को निष्क्रिय, कल्पनाहीन, अरचनात्मक, आज्ञाकारी प्राणी बनाता है। जनसंचार प्रौद्योगिकियां इसे और अधिक व्यापक बनाती हैं, जो वर्तमान युग के बारे में सच है, जहां विभिन्न डिजिटल प्रौद्योगिकियों का व्यापक उपयोग होता है, जो मनोरंजन उद्योगों को संरक्षण प्रदान करते हैं। चाहे कितनी भी विकट या कठिन परिस्थितियाँ हों, नासमझ मनोरंजन द्वारा दिये जाने वाले आनंद की खोज व्यक्ति को आत्मसंतुष्ट और निष्क्रिय बना देती है। पूंजीवादी वैचारिक ढांचे का खतरा यह है कि यह संतुष्टि और व्यक्तिगत विकल्पों और अवसरों की झूठी या भ्रामिक भावना पैदा करता है, और संरचनात्मक असमानताओं से ध्यान हटाता है। उदाहरण के लिए, ऐसे कार्यक्रम जो महत्व और मौद्रिक सफलता प्राप्त करने के अवसर प्रदान करते हैं, जैसे कि हू वॉन्ट्स टू बी अ मिलियनेयर (Who Wants to be a Millionaire) एक वैश्विक फ्रैंचाइजी जिसका भारतीय समतुल्य कौन बनेगा करोड़पति (Kaun Banega Crorepati) है। प्रदान की गई 'वास्तविकता' परिस्थिति और नीरसता से कथित दूरी एक आकर्षण है, जो न केवल वंचितों को बल्कि सामान्य लोगों को समान रूप से छूता है। इस अर्थ में जन–संस्कृति ऐसे सांस्कृतिक उत्पादों का निर्माण करती है, जो बड़ी संख्या में लोगों को आकर्षित करते हैं। एडोर्नो के अनुसार, श्रमिक वर्ग और धनवानों के ध्रुवीकरण की मार्क्सवादी धारणा के विपरीत, जहां प्रत्येक के लिए अलग क्षेत्र निर्धारित था, बड़े पैमाने पर उत्पादित मनोरंजन की खपत दो वर्गों के बीच के भेद को मिटा देती है, दोनों बड़े पैमाने पर मनोरंजन के सम्मोहन के तहत हैं, जो भौतिक और संरचनात्मक असमानताओं को छुपाती है। इसके अलावा, एडोर्नो और होर्खाइमर जन–संस्कृति के स्थान पर संस्कृति उद्योग शब्द का चयन करते हैं, क्योंकि आम लोग अक्सर जन–संस्कृति को जनता की सहज अभिव्यक्ति के रूप में मानते हैं।

बाद के एक निबंध में जिसे एडोर्नो ने 'द कल्चर इंडस्ट्री रिकॉन्सिडर्ड' (The Culture Industry Reconsidered) शीर्षक से प्रकाशित किया, वह बताते हैं कि वह जन–संस्कृति शब्द के स्थान पर संस्कृति उद्योग शब्द का चयन क्यों करते हैं। वह लिखते हैं, ''हमारे ड्राफ्ट में हमने 'मास कल्चर' (Mass Culture) की बात की थी। हमने उस अभिव्यक्ति को 'संस्कृति उद्योग' के साथ बदल दिया, ताकि शुरुआत से ही इसके समर्थकों के लिए स्वीकार्य व्याख्या को छोड़ा जा सके: कि यह संस्कृति की तरह कुछ ऐसा है, जो जनता से सहज रूप से उत्पन्न होता है, लोकप्रिय संस्कृति का समकालीन रूप ''('द कल्चर इंडस्ट्री रिकॉन्सिडर्ड', 2012: 98)

महत्वपूर्ण बात यह है कि एडोर्नो जन–संस्कृति को लोकप्रिय संस्कृति से स्पष्ट रूप से अलग करते हैं। दूसरे शब्दों में, वह केवल उस संस्कृति का उल्लेख नहीं कर रहे हैं, जिसका विशेष रूप से अधिक व्यापक वर्गों के बीच विस्तृत प्रसार होता है, बल्कि वह संकेत दे रहे हैं कि संस्कृति का स्वरूप बदल गया है। वह इस संबंध में संस्कृति उद्योग शब्द को उपयोगी पाते हैं, क्योंकि यह स्पष्ट करता है कि संस्कृति की प्रकृति अब बदल गयी है; संस्कृति अब एक वस्तु का रूप ले चुकी है। यह एक उद्देश्य से बंधा हुआ है, जबकि कला और संस्कृति की वास्तविक प्रकृति को उद्देश्य के खिलाफ होना चाहिए, इसे मानवीय स्थिति का प्रतिबिंब होना चाहिए।इसके बजाय संस्कृति उद्योग अब ''लाभ के उद्धेश्य को सांस्कृतिक रूपों में स्थानांतरित करता है'' (एडोर्नो, द कल्चर इंडस्ट्री रिकॉन्सिडर्ड), यह संस्कृति के पहलुओं को बदल देता है, जो मानव स्थिति के संघर्षों और विरोधाभासों को ऐसे उत्पादों में उजागर करते हैं, जिन्हें खरीदा जा सकता है, ताकि तनाव ,जिसे वे दिखाते है, को खत्म किया जा सके।

एडोर्नो और होर्खाइमर ने विशेष रूप से बड़े पैमाने पर उत्पादित संस्कृति उद्योग को अधिक तकनीकी और बौद्धिक रूप से कठिन उच्च कलाओं के लिए खतरनाक माना, क्योंकि संस्कृति उद्योग झूठी मनोवैज्ञानिक जरूरतों की उपज है, जिसे केवल पूंजीवाद के उत्पादों से ही पूरा और संतुष्ट किया जा सकता है; इसके विपरीत, सच्ची मनोवैज्ञानिक आवश्यकताएँ स्वतंत्रता, रचनात्मकता और वास्तविक खुशी हैं, जिसका हर्बर्ट मार्क्यूज भी उल्लेख करते हैं, जिसे आप अपनी अगली इकाई में पढ़ेंगे।

इसके अलावा, संस्कृति वस्तुओं की नकल करना शुरू कर देती है। इसका बड़े पैमाने पर उत्पादन और मानकीकरण संस्कृति के उत्पादन में आदर्श प्रतीत होता है। उदाहरण के लिए, सोचिए एक फॉर्मूला फिल्म जो एक मानकीकृत कहानी पर आधारित है कथानक या सूत्र वही रहता है, संदर्भ बदल जाता है– चाहे वह कॉलेज रोमांस हो, या शहर की हलचल या गाँव के शांत वातावरण में फिल्माई गई रोमांटिक कहानी हो। कहानी में एक लड़का और लड़की हैं, एक सख्त अनिच्छुक परिवार या पिता या किसी प्रकार की बाहरी शक्ति के रूप में एक खलनायक है, और संघर्ष का सुखद समाधान है। कुछ नहीं बदलता, सब वही रहता है। यह संस्कृति का मानकीकरण है, जिसके बारे में एडोर्नो चिंताशील थे; संघर्ष और इसके समाधान के चित्रण में इसने दो महत्वपूर्ण कार्यों को पूरा किया, जिसने संस्कृति उद्योग के उत्पाद के रूप में इसकी गुणवत्ता पर प्रकाश डाला। एक, यह संघर्ष को कम करता है और इसे सामान्य स्तर पर लाता है; संस्कृति उद्योग में दर्शाया गया संघर्ष उस समय के विरोधाभासों को प्रतिबिंबित नहीं करता है। यह एक व्यक्तिगत खलनायक बनाता है, और हमें व्यवस्थाओं या संरचनाओं को एक समस्या के रूप में देखने नहीं देता है और इन संघर्षों को इस तरह से हल करता है, जिसकी वास्तविक दुनिया में शायद ही कभी कल्पना की जा सकती है। क्या नायिका का पिता उसे भागने से रोकने में खलनायक है या पितृसत्ता की व्यवस्था है, जो उसे स्वतंत्र जीवन जीने के लिए पिता की अनुमति लेने के लिए बाध्य करती है? दूसरा यह है कि यह संस्कृति को निष्पक्ष रूप में दर्शाता है, और अनुभव जन्य

वास्तविकता और कला के माध्यम से दिखाई गई संस्कृति के बीच के अंतर को और बढ़ा देता है। ऐसा करने में वह स्वयं को सत्य और निष्पक्ष मानता है– सच का भ्रम पैदा करता है।

8.4.2 संस्कृति उद्योग के उत्पाद और प्रक्रिया

एडोर्नो पाठकों से आग्रह करता है कि वे संस्कृति उद्योग शब्द को शाब्दिक अर्थों में न लें। उद्योग शब्द का उपयोग करने का कारण एक औद्योगिक कारखाने में उत्पादन की प्रक्रिया को संदर्भित करना है, जहां मानकीकरण होता है और जहां तर्कसंगत उत्पादन प्रक्रियाओं का उपयोग किया जाता है, जहां कई तत्व होते हैं। प्रत्येक तत्व को कई इकाइयों और उप–इकाइयों द्वारा एक साथ रखा जाता है। मानकीकरण हासिल किया जाता है, ताकि ज्यादा दर्शकों तक पहुँचा जा सके। यह देखा गया है कि फिल्म या संगीत उद्योग का उद्देश्य बिक्री है। संस्कृति उद्योग में, एडोर्नो का तर्क है (मार्क्सवादी सिद्धांत से प्रेरित), संस्कृति के मानकीकृत उत्पादों को उनके विनिमय मूल्य से आंका जाता है, बजाय के उनके उपयोग मूल्य से, उनका दावा है: ''हर चीज का मूल्य केवल इतना है कि उसका आदान–प्रदान किया जा सकता है, न कि उस हद तक जहां तक वह अपने आप में कुछ है। उपभोक्ताओं के लिए कला का उपयोग मूल्य, इसका सार, एक अंध–भक्ति या फेटिश है, और फेटिश सामाजिक मूल्यांकन, जिसे वे कला के कार्यों की विशेषता मानने की गलती करते हैं– इसका एकमात्र उपयोग मूल्य बन जाता है, एकमात्र गुणवत्ता, जिसका वे आनंद लेते हैं'' (एडोर्नो और होर्खाइमर, 2002:3)।

उदाहरण के लिए, कला के कार्यों की लागत से यह मूल्यांकन किया जाता है कि वे अच्छे हैं या नहीं, जो यह दर्शाता है कि संस्कृति उद्योग में कला को एक वस्तु के रूप में कैसे बदल दिया गया है। ऐसी स्थितियों में, एडोर्नो के अनुसार, मूल्य के दावों के माध्यम से उच्च कला अपने वस्तु रूप में बदल जाती है, जबकि समाज के निचले तबके से उभरने वाली कला, जिसमें व्यवस्था का प्रतिरोध करने की क्षमता होती है, संस्कृति उद्योग के बल से गंभीर रूप से बाधित होती है। उदाहरण के लिए हिप–हॉप या रैप (Hip-hop and Rap) संगीत लें, जो अमेरिका की सड़कों और निकट के अफ्रीकी क्षेत्रों में उभरा। यह उभरता हुआ संगीत रूप, जो अफ्रीकी अमेरिकी लोगों से स्वभाविक रूप से उभरा, अक्सर उनके हाशिए के जीवन और उसके प्रतिरोध की अभिव्यक्ति थी, हालांकि, इस संगीत का रूप जल्द ही संस्कृति उद्योग के वाणिज्यिक प्रारूप में पूरी तरह से एकीकृत हो गया।

8.4.2.1 मानकीकरण

एडोर्नो और होर्खाइमर का तर्क है कि संस्कृति उद्योग की आवश्यक विशेषता पुनरावृत्ति (Repetition) है। ''गंभीर संगीत'' के विपरीत लोकप्रिय संगीत मानकीकरण के बारे में है, जैसा कि 1936 की शुरुआत में, जैज पर अपने निबंध में, एडोर्नो लोकप्रिय संगीत की इस आवश्यक विशेषता को इंगित करता हैं, यहां तक कि जहां मानकीकरण में स्पष्ट रूप से बाधा उत्पन्न होती है, परन्तु संगीत के फार्मूला–बद्ध हिस्सों की व्यापक लोकप्रियता होती है। एक मानकीकृत संगीत के विभिन्न हिस्सों में प्रतिस्थापन क्षमता होती है, जो गंभीर संगीत में संभव नहीं है। गंभीर संगीत एक ''ठोस समग्रता'' है; ''हर विवरण अपने संगीत की अनुभूति को

कलाकृति की ठोस समग्रता से प्राप्त करता है'' यदि एक विवरण छूट जाता है, ''सब खो जाता है।'' (एडोर्नो, 1941:19)

सांस्कृतिक उत्पाद के मानकीकरण से दर्शकों का मानकीकरण होता है। ''मनुष्य को एक प्रजाति के सदस्य के रूप में संस्कृति उद्योग द्वारा एक वास्तविकता बना दिया गया है। अब कोई भी व्यक्ति केवल उन विशेषताओं को दर्शाता है, जिनके द्वारा वह हर किसी की जगह ले सकता है; वह विनिमेय है।'' (एडोर्नो, 1947:147) मानकीकृत उत्पाद जनता के लिए संतुष्टि पैदा करते हैं और साथ ही व्यवस्था को कायम रखने में सक्षम बनाते हैं। ऐसा करने में जनता, जिसके लिए संस्कृति उद्योग के उत्पाद मौजूद हैं, विषय नहीं, बल्कि स्वयं एक वस्तु हैं। सांस्कृतिक उत्पादों के उत्पादन का उद्देश्य पूर्व निर्धारित है, यह तत्काल संतुष्टि, आनंद और संघर्ष और विरोधाभास से ग्रस्त सामाजिक परिस्थितियों, जिसमें व्यक्ति खुद को पाते हैं, से बचने की भावना प्रदान करते हैं। एडोर्नो विकर्षण थीसिस (डिस्ट्रेक्शन थीसिस) का आह्वान करते हैं। ''विकर्षण'' या डिस्ट्रेक्शन (Distraction) और पूंजीवाद का एक सहसम्बन्ध है; उत्पादन का यह तरीका, ''जो बेरोजगारी, आय की हानि, युद्ध के बारे में भय और चिंता पैदा करता है, मनोरंजन में इसका 'गैर–उत्पादक' सहसम्बन्ध है; यानी विश्रांति जिसमें एकाग्रता का प्रयास बिल्कुल भी शामिल नहीं है'' (एडोर्नोः 1941: 37–38)।

8.4.2.2 कृत्रिम–व्यक्तिकरण

बड़े पैमाने पर विपणन के लिए, ''एक सफल गीत में कम से कम एक विशेषता होनी चाहिए, जिसके द्वारा इसे किसी अन्य से अलग किया जा सकता है, और फिर भी इसमें अन्य सभी की पूर्ण–पारंपरिकता और साधारणता होनी चाहिए।'' (*ibid*: 17)। कृत्रिम–व्यक्तिकरण के बिना, जिसे मार्केटिंग उद्योग ''उत्पाद विशिष्टीकरण'' कहता है, गीत का सफलतापूर्वक विपणन नहीं किया जा सकता था। मानकीकरण के बिना, इसे ''ग्राहक की ओर से किसी भी प्रयास की आवश्यकता के बिना, स्वचालित रूप से बेचा नहीं जा सकता'', इसका बड़े पैमाने पर विपणन नहीं किया जा सकता (*ibid.*)

गतिविधि 1

भारतीय टेलीविजन के कुछ सोप ओपेरा (Soap Operas) देखें; जैसे सास–बहू (सास और बहू) धारावाहिकों की शैली। और उन विभिन्न तत्वों का वर्णन कीजिए, जो उन्हें लोकप्रिय बनाते हैं। विभिन्न धारावाहिक एक जैसे और अलग कैसे हैं? उन्हें क्या मानकीकृत बनाता है, और क्या उन्हें कृत्रिम–व्यक्तिगत बनाता है? अध्ययन–केंद्र में अपने साथी शिक्षार्थियों के साथ अपने विचार साझा करें।

इस संबंध में, ऐसे उत्पादों के उपभोक्ता, जन–साधारण, संभवतः इस धोखे (Deception) के बारे में जानते हैं–फिर भी एडोर्नो का तर्क है कि वे इन उत्पादों को खरीदते हैं। यदि यह उन्हें एक क्षणिक सुख देता है, तो वे स्वेच्छा से उत्पादों का उपभोग करते हैं, क्योंकि उन्हें ऐसा प्रतीत होता है जैसे उनका जीवन इनके होने से अधिक सहनीय होगा। सामाजिक स्वतंत्रता को सीमित करने वाली ताकतों द्वारा एकाधिकार वाले जीवन में, एडोर्नो का तर्क है, लोगों का स्वेच्छा से संस्कृति

उद्योग के आकर्षण की तरफ झुकाव हो जाता है, क्योंकि वे ''जानते हैं या संदेह करते हैं कि यह वह जगह है, जहां उन्हें आचार–विचार सिखाया जाता है, जिसकी उन्हें एकाधिकार वाले जीवन में निश्चित रूप से आवश्यकता होगी।''(द कल्चर इंडस्ट्री रिकॉन्सिडर्ड, 2012: 92)। संस्कृति उद्योग में मशहूर हस्तियों और आकर्षक कलाकारों ('Heart-Throbs') की भूमिका महत्वपूर्ण है, जीवन और अस्तित्व के एक निश्चित तरीके की धारणा का प्रचार करने के लिए, जो पूरी तरह से वस्तुकरण कर देता है। प्रसिद्ध हस्तियों की तरह कपड़े पहनने, अभिनय करने और बात करने के हमारे प्रयास संस्कृति उद्योग में हमारी पूर्ण–तन्मयता से पैदा हुए हैं। क्या ऐसी परिस्थितियों में स्वायत्त चेतना के विकसित होने की कोई संभावना है?

बोध प्रश्न 2

नोटः i) अपने उत्तरो के लिए नीचे दिए गए स्थान का प्रयोग कीजिए।

ii) इकाई के अंत में दिए गए उत्तरों से अपने उत्तर मिलाइए।

1. ''संस्कृति उद्योग'' से एडोर्नो और होर्खाइमर का क्या अभिप्राय है?

.....

.....

.....

.....

2. एडोर्नो के अनुसार, विकर्षण थीसिस क्या है?

.....

.....

.....

.....

8.5 सारांश

हमने इकाई की शुरुआत एडोर्नो के समय के सामाजिक–राजनीतिक संदर्भ में की। जैसा कि आपने देखा,उनके जीवन की प्रगति, उनके अनुभवों और उनके कई बौद्धिक प्रभावों ने उनके लेखन को आकार दिया है। एडोर्नो कार्ल मार्क्स के विचारों से प्रभावित थे, जिसका विस्तार उन्होंने समकालीन संस्कृति तक किया था। इसलिए कमौडिटी फैटिशिज़म पर एक संक्षिप्त चर्चा करना महत्वपूर्ण था। यह भी महत्वपूर्ण था कि विज्ञान और प्रबोधन द्वारा प्रदान की जाने वाली संभावनाओं में विश्वास करने वाले कई पारंपरिक मार्क्सवादियों के विपरीत, एडोर्नो ने स्वतंत्रता की प्रबोधन परियोजना पर सवाल उठाया और आलोचना की कि वह कैसे प्रौद्योगिकी समाज की अधीनता का साधन बन गई है, चाहे वह स्वेच्छा से, धोखे से या दबाव से हो।

संस्कृति उद्योग धोखे या झूठी चेतना का नया रूप है, जिसमें लोग स्वेच्छा से शामिल होते हैं। इकाई के अंतिम भाग में संस्कृति उद्योग के विभिन्न पहलुओं पर चर्चा की गई है।

8.6 संदर्भ

M. Horkheimer and T. W. Adorno, ed. G. S. Noerr, trans. E. Jephcott, 2002. (1947) *Dialectic of Enlightenment: Philosophical Fragments*. Stanford: Stanford University Press

Theodor Adorno, (1941) "On Popular Music," *Studies in Philosophy and Social Sciences* , Vol. IX, No. 1

Adorno, T. W., & Rabinbach, A. G. (1975). Culture Industry Reconsidered. *New German Critique*, (6), 12-19.

8.7 बोध प्रश्नों के उत्तर

बोध प्रश्न 1

1. एडोर्नो की यहूदी विरासत ने उन्हें नाजी जर्मनी से निर्वासन की तलाश करने के लिए मजबूर किया, हिटलर के तहत नाजीवाद ने यहूदी समुदाय को बड़ी संख्या में सताया, इस अवधि में कई यहूदियों को जर्मनी से भागना पड़ा। इस राज्य के निर्वासन का उनके जीवन और सोच पर गहरा प्रभाव पड़ा और जो उनके लेखन में परिलक्षित होता है।

2. कमौडिटी फैटिशिज़म वस्तुओं को तटस्थ वस्तुओं के रूप में मानता है। उन वस्तुओं का मूल्य उनका खुद का मूल्य प्रतीत होता है। एक वस्तु के लिए मूल्य का आरोपण, जो आंतरिक रूप से नहीं है, वास्तव में उन सामाजिक संबंधों और उत्पादन प्रक्रियाओं को छुपाता है, जो वस्तु के निर्माण में इस्तेमाल हो गए हैं; विशेष रूप से मानवीय संबंध, जो उत्पादन प्रक्रिया का हिस्सा हैं। हम समझते हैं कि हम वस्तु का क्या उपयोग कर सकते हैं यानी इसका उपयोग मूल्य है, लेकिन हम उन विभिन्न तत्वों को देख नहीं सकते हैं, जिन्होंने वस्तु को मूल्य दिया है। उदाहरण के लिए, जब हम चॉकलेट खरीदते हैं, तो हम निश्चित रूप से इसका आनंद लेते हैं, लेकिन शायद ही हम जानते हैं कि चॉकलेट मध्य अफ्रीका या दक्षिण अमेरिका से प्राप्त कोको (Cocoa) की फलियों से आती है, जहां अक्सर बाल श्रम को इसकी कटाई और उत्पादन में लगाया जाता है।

बोध प्रश्न 2

1. जब एडोर्नो और होर्खाइमर संस्कृति उद्योग की बात करते हैं, तो वे मानकीकृत सांस्कृतिक निगम द्वारा निर्मित कृतियों–फिल्मों, रेडियो कार्यक्रमों, पत्रिकाओं

आदि की बात कर रहे हैं। संस्कृति अब एक वस्तु का रूप ले चुकी है। यह एक उद्देश्य से बंधा हुआ है, जबकि कला और संस्कृति की वास्तविक प्रकृति को उद्देश्य के खिलाफ होना चाहिए, इसे मानवीय स्थिति का प्रतिबिंब होना चाहिए। इसके बजाय संस्कृति उद्योग अब लाभ के मकसद को सांस्कृतिक रूपों में स्थानांतरित करता है।

2. ''विकर्षण'' या डिस्ट्रेक्शन पूंजीवाद का एक अभिन्न पहलू है, जहाँ चिंताएँ, भय, नुकसान आदि, जो गरीबी या अभाव या सामाजिक संरचनाओं और संबंधों की वास्तविक स्थितियों से उत्पन्न होते हैं, इन चिंताओं और वास्तविकताओं को बुद्धिहीन मनोरंजन यानी विश्रांति के द्वारा कम किया जाता है, जिसमें एकाग्रता का प्रयास बिल्कुल भी शामिल नहीं होता है।

जैसा कि होर्खाइमर और एडोर्नो बताते हैं, ''आधुनिक संचार मीडिया का एक अलग प्रभाव है।''/19/ इसमें सामाजिक और शारीरिक अलगाव दोनों शामिल हैं। पूंजीवादी समाज का आधुनिक प्रशासन, संचार के अपने प्रभावी साधनों के साथ, लोगों को सामूहिक बातचीत से दूर रखता है। ऑटोमोबाइल ''एक दूसरे से पूर्ण अलगाव में'' लोगों की यात्रा की सुविधा प्रदान करते हैं। वे आगे कहते हैं कि ''संचार लोगों को अलग–थलग करके एकरूपता स्थापित करता है।'' /20/ आइए विचार करें कि लोकप्रिय संगीत द्वारा यह समानता कैसे उत्पन्न होती है।